हिंदी विश्व

विश्व हिंदी सम्मेलन
फ़िजी, 2023

गुरुवार, 16 फरवरी 2023 • फिजी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र • द्वितीय अंक

आधुनिक फिजी के निर्माण में भारतवंशियों का बहुत योगदान : रातू विल्यम कटोनिवेरे

नादी, 15 फरवरी, 2023। फिजी के राष्ट्रपति रातू विल्यम कटोनिवेरे ने कहा है कि आधुनिक फिजी के निर्माण में भारतवंशियों का बहुत योगदान है। श्री कटोनिवेरे आज यहाँ 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन कर फिजी सरकार प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। इस आयोजन ने भारत के साथ फिजी के ऐतिहासिक संबंधों की याद ताजा कर दी है, जिसकी शुरुआत ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में हुई थी। जो भारतवंशी यहाँ गन्ने की खेती के लिए लाए गए, उन्होंने इस देश के निर्माण में अपना श्रम नियोजित किया। उनकी भाषा हिंदी थी। उसे ही आज हम फिजी हिंदी कहते हैं। फिजी में बॉलीवुड की फिल्मों ने भी हिंदी को लोकप्रिय बनाया है। राष्ट्रपति ने कहा कि हिंदी भाषा की सांस्कृतिक जड़ें फिजी में जिंदा हैं। कृत्रिम मेधा से भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास को गति मिलेगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस आयोजन से हिंदी भाषा के संरक्षण में मदद मिलेगी। फिजी के राष्ट्रपति ने कहा कि यूनेस्को की रिपोर्ट में विश्व की कई भाषाओं के लुप्त होने पर चिंता जताई गई है। इसलिए भाषाओं को बचाना बहुत जरूरी है। यह तीन दिवसीय सम्मेलन उस दिशा में फलदायी होगा, इसकी हम उम्मीद करते हैं।

सांस्कृतिक पुनर्संतुलन की आवश्यकता : डॉ. एस. जयशंकर

नादी, 15 फरवरी, 2023। भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा है कि विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजनों में हमारा ध्यान हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं, उसके वैश्विक प्रयोग और उसके प्रचार–प्रसार पर है। विदेश मंत्री आज 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में उद्घाटन भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन विश्व में हिंदी को सम्मान दिलाने का उपक्रम है। विदेश मंत्री ने कहा कि यह हर्ष की बात है कि हम 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन नादी में कर रहे हैं। इसके लिए मैं फिजी की सरकार का धन्यवाद करता हूं। यह हमारे दीर्घकालिक संबंधों को आगे बढ़ाने का भी अवसर है। विदेश मंत्री ने कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजनों में स्वाभाविक है कि हमारा ध्यान हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं, उसके वैश्विक उपयोग और प्रचार–प्रसार पर रहे। हम फिजी, प्रशांत क्षेत्र तथा गिरमिटिया देशों में हिंदी की स्थिति, सूचना प्रौद्योगिकी, सिनेमा और साहित्य के हिंदी पर प्रभाव जैसे मुद्दों पर चर्चा करेंगे। डॉ. जयशंकर ने

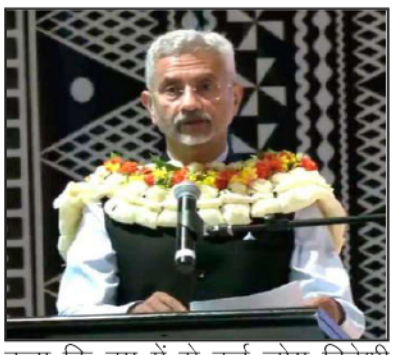

कहा कि हम में से कई लोग विदेशी परिवेश से जुड़े हुए हैं और आगे भी रहेंगे और हो सकता है, वहां घर भी बसाएं। ऐसे में यह जरूरी है कि उन लोगों की पहचान और विरासत पर ध्यान दें, जो अपनी मूल संस्कृति से दूर हैं और इन मुद्दों को बल देने के लिए भाषा को केंद्रित करना एक प्रभावी तरीका है। उन्होंने कहा कि वह युग पीछे छूट गया है, जब प्रगति को पश्चिमीकरण के समान माना जाता था। ऐसी कई भाषाएं, परंपराएं, जो औपनिवेशिक युग के दौरान दबा दी गई थीं, फिर से वैश्विक मंच पर आवाज उठा रही हैं। ऐसे में आवश्यक है कि विश्व को सभी संस्कृतियों और समाजों के बारे में जानकारी हो। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक पुनर्संतुलन आवश्यक है। इसी दिशा में फिजी सरल प्रवासन का ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने इस आयोजन के लिए फिजी गणराज्य की सरकार के प्रयत्नों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि एक नए भारत का निर्माण हो रहा है जो बड़े से बड़े कार्य को पूर्ण करने में सक्षम है।

फिजी में भाषा प्रयोगशाला बनेगी : वी. मुरलीधरन

नादी, 15 फरवरी, 2023। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह की प्रास्ताविकी में विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन ने कहा कि फिजी हिंदी के लिए उर्वर भूमि है, यह देखकर मन बड़ा प्रफुल्लित है। उन्होंने घोषणा की कि भारत सरकार फिजी में भाषा प्रयोगशाला की स्थापना करेगी, जो यहाँ के हिंदी प्रेमियों के लिए उपहार होगा। यहाँ हिंदी 1979 ई. से आधिकारिक भाषा है।

उन्होंने कहा कि विभिन्न ज्ञानानुशासनों को भारत की विश्व को अद्भुत देन है। उन्होंने कहा कि आज हिंदी पारंपरिक ज्ञान से लेकर कृत्रिम मेधा तक प्रभावशाली रूप से क्रियाशील है। यह सम्मेलन हिंदी को भावनात्मक धरातल से उठाकर विज्ञान तक पहुंचाने का उपक्रम है।

उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने की दिशा में सतत् प्रयास किये जाएंगे। वी. मुरलीधरन ने कहा, मैं फिजी की नई चुनी सरकार को बधाई देता हूँ और इस सम्मेलन का फिजी में आयोजन के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं।

संस्कृति के प्रसार में भारत सरकार तत्पर : मिश्र

नादी, 15 फरवरी, 2023। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भारत के गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र ने कहा कि भारत सरकार भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए सतत तत्पर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हिंदी भाषा के माध्यम से भारत की संस्कृति पूरे विश्व में

लगातार फल–फूल रही है। उन्होंने भारत की विश्व बंधुत्व की भावना को विशेष रूप से रेखांकित किया। उन्होंने फिजी के इतिहास एवं उसकी परंपरा के मूल्यवान तत्वों पर प्रकाश डालते हुए एक–दूसरे की साझी विरासत की भी चर्चा की। उन्होंने प्रवासी भारतीय दिवस की चर्चा करते हुए हिंदी के वैश्विक फलक को चिह्नित किया। श्री मिश्र ने उम्मीद जताई कि जल्द ही संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को पूर्ण स्वीकृति मिल जाएगी।

उत्साह और उल्लास से हुआ अतिथियों का पारंपरिक स्वागत

नादी 15 फरवरी, 2023। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ आज पूर्वाहन 09.30 बजे फिजी गणराज्य के मुख्य नगर नादी के देनाराउ आइलैंड कन्वेंशन सेंटर में हुआ। यह सम्मेलन तीन दिनों तक चलेगा। उद्घाटन समारोह दोनों देशों के राष्ट्रगान से शुरू हुआ। सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन मुख्य अतिथि फिजी गणराज्य के राष्ट्रपति रातू विल्यम कटोनिवेरे और भारत के विदेशमंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उसके उपरांत प्रो. परमानंद भारद्वाज और ब्रह्मदत्त शास्त्री ने वैदिक मंगलाचरण प्रस्तुत किया। प्रो. परमानंद भारद्वाज और प्रो. विजेंद्रपल्ली ने लौकिक मंगलाचरण किया। उद्घाटन समारोह में अतिथियों और विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रतिभागियों का गर्मजोशी से पा. रंपरिक स्वागत किया गया। फिजी के कलाकारों ने नैसर्गिक शक्तियों का पारंपरिक आह्वान कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उस आह्वान में विश्व को सुख–शांति देने की प्रार्थना की गई। यह एक प्रकार का साधना क्रम है जिसमें सामूहिक रूप से प्रार्थना की जाती है। यह प्रकृति–संरक्षण का सुंदर विधान है, जो फिजी के पा. रंपरिक जीवन का अभिन्न अंग है। फिजी गणराज्य के शिक्षामंत्री असेरी रेड्रोड्रो ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि उनकी सरकार ने हिंदी भाषा को बहुत महत्व दिया है। उद्घाटन समारोह में विशेष डाक टिकट जारी किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन स्मारिका, गगनांचल, विश्व भारतीय साहित्य, राजभाषा भारती व आरंभिका के विशेषांकों और फिजी का हिंदी साहित्य शीर्षक पुस्तक का लोकार्पण फिजी के राष्ट्रपति रातू विल्यम कटोनिवेरे और भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने किया। उद्घाटन समारोह का संचालन प्रो. अनुराधा पाण्डेय और अलका सिन्हा ने किया। फिजी गणराज्य के कार्यकारी स्थायी सचिव, शिक्षा मंत्रालय तिमोकी वुरे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूरे विश्व की जरूरत है भारतीय ज्ञान परंपरा : अतुल कोठारी

नादी, 15 फरवरी, 2023। शिक्षाविद्, शिक्षा–संस्कृति उत्थान न्यास के सचिव श्री अतुल कोठारी ने कहा है कि भारतीय ज्ञानपरंपरा सिर्फ भारत के लिए नहीं अपितु पूरे विश्व की आवश्यकता है। श्री कोठारी 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के 'पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा' सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत ने दुनिया को गिनना सिखाया है। आत्मनिर्भरता के स्तर पर भारत को आगे बढ़ाना है तो पारंपरिक ज्ञान बहुत आवश्यक है। योग पूरे विश्व में स्वीकार हो गया है, भारत से ज्यादा तो अमरीका में है। योग में भारतीय ज्ञानपरंपरा की महती भूमिका है। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की जरूरत है। एनईपी में इसकी बात कही गई है। इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मेडिकल के क्षेत्र में नेचरोपैथी को लाने की जरूरत है। भारतीय ज्ञानपरंपरा को आज के संदर्भ में ढालने की जरूरत है और इन सबको हिंदी में पढ़ाने की जरूरत है। केवल कंप्यूटर और कृत्रिम मेधा ही सब नहीं है, इसके साथ विवेक का प्रयोग भी करना होगा एवं भारतीय परंपरा के ज्ञान को समन्वित करना होगा। इसका माध्यम हिंदी, संस्कृत और भारतीय भाषाओं को बनाना चाहिए तभी हम दुनिया को दे पायेंगे। अध्यक्षीय वक्तव्य में विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन ने कहा है कि विश्व हिंदी सम्मेलनों की परंपरा में यह पहली बार है कि पारंपरिक ज्ञान और टेक्नोलॉजी कदम से कदम मिलाकर चल रही है। सबको साथ लेकर चलना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। यह विषय हमारी समृद्ध विरासत को प्रकट करता है। साथ ही संकेत देता है कि हमारी सभी भाषाएं तकनीक के साथ जुड़ रही हैं। हिंदी कृत्रिम मेधा के साथ काम करने में सक्षम है क्योंकि कंप्यूटर हिंदी भाषा को पहचानता है। इसका उदाहरण एलेक्सा, रोबोट है। यह ज्ञान–विज्ञान के सभी माध्यमों में कार्य करने का सशक्त माध्यम है। भारत विश्व स्तर पर मजबूत हो रहा है। जब कोई देश मजबूत होता है तो उसकी भाषाएं भी सशक्त होती हैं। आज पूरी दुनिया एक परिवर्तन से गुजर रही है, जिसमें डिजिटल क्रांति की अहम भूमिका है। यदि हमारे पूर्वजों ने हवाई जहाज नहीं बनाया होता तो विमान शब्द हमारे पास नहीं होता। नयी शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा की बात कही गई है। कौशल विकास की पढ़ाई हिंदी में करायी जा रही है। प्रधानमंत्री जी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में ग्लोबल हब बनाने की बात कर चुके हैं। पारंपरिक ज्ञान, समर्थ भाषा और समर्थ तकनीक सब तक पहुंचे, यही इस सम्मेलन का उद्देश्य है।

सह–अध्यक्षता करते हुए गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र ने कहा कि भारत संभावनाओं का देश है। उन्होंने जेनेवा में हुए सम्मेलन का जिक्र करते हुए हिंदी की विभिन्न शोध परियोजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने हिंदी की वैश्विक पहचान के प्रति विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने एक शेर 'जुस्तजू हो तो सफर खत्म कहां होता है, यूं तो हर मोड़ पे मंजिल का गुमां होता है'; का जिक्र किया। इस अवसर पर कंठस्थ 2.0 मोबाइल एप और केंद्रीय हिंदी संस्थान की पत्रिका के फिजी विशेषांक का लोकार्पण किया गया। केंद्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश के कुलपति प्रो. टी.वी. कट्टीमनि ने कहा कि हमें यह निःसंकोच स्वीकार करना चाहिए कि भारतीय भाषाओं की स्थिति अच्छी नहीं है। भारतीय भाषाओं के साथ हमारी संवेदनाएं जुड़ी हुई हैं। हर सरकार की कुछ प्राथमिकता होती है। वर्तमान सरकार की प्राथमिकता कौशल प्राप्त करना है। एनईपी का यही कहना है कि भारतीय शिक्षा को तकनीक में लाना है। आज सब बदल गया है लेकिन हिंदी का सिलेबस अब तक नहीं बदला है। हिंदी के पाठ्यक्रम में कौशल, एंड्रायड, तकनीक नहीं है। एनईपी मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन की बात करती है। पहले प्राध्यापकों को कंप्यूटर की शिक्षा लेनी पड़ेगी। हमको अपडेट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि निरमा वाशिंग पाउडर, एमडीएच मसाला की सक्सेस स्टोरी हमारे सिलेबस में क्यों सम्मिलित न की जाए। लोकल सक्सेस स्टोरी को किताबों में लाये जाने की जरूरत है। डिमांड एंड सप्लाई को देखना होगा। एक हजार पी–एच.डी. हर साल होती हैं किंतु नौकरियां कितनो को मिलती हैं। हर बच्चे को एम.ए. के बाद चार–पांच स्किल्स आने चाहिए। गांधीजी ने कहा था कि दिमाग और हाथ साथ चलना चाहिए। आज मोदी जी कह रहे हैं कि आज दिमाग, हाथ और हृदय–तीनों साथ चलने चाहिए। साहित्य को इससे संबंधित होना चाहिए। विज्ञान, उद्योग आदि का विकास कृत्रिम मेधा और भाषा के माध्यम से होना चाहिए। हमें सीमाओं में नहीं रहना चाहिए, अपने विषय की सीमाओं से बाहर आना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों और लेखकों से आह्वान किया कि वो स्वयं को तकनीक से जोड़ें क्योंकि जिस भाषा में अन्न कमाने की शक्ति है उसे सरकार को प्रमोट करने की आवश्यकता नहीं है। जेएनयू के भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष प्रो. सुधीर प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी ने कृत्रिम मेधा को किस रूप में स्वीकार किया है तथा हिंदी ने कृत्रिम मेधा का प्रयोग करते हुए पारंपरिक ज्ञान को जनसामान्य तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञानपरंपरा अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के कारण अलग है। भारतीय परंपरा संवादमूलक रही है। भारतीय ज्ञानपरंपरा ने वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का प्रसार किया है जबकि पाश्चात्य संस्कृति में ज्ञान शक्ति का प्रतीक है। कृत्रिम मेधा मानव बुद्धि की प्रतिकृति है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। तकनीक ने इसे विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाया है। तकनीकविद् व माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी बालेन्दु शर्मा दाधीच ने आर्थर सी क्लार्क को उद्धृत करते हुए कहा कि कोई भी पर्याप्त रूप से विकसित पद्धति किसी जादू से कम नहीं होती है। कई तकनीकों ने हमारी दुनिया बदल दी है– 1. प्रिंटिंग प्रेस, 2. भाप इंजन, 3. बिजली, 4. पी.सी. और 5. इंटरनेट/वेब; तकनीक हमारे जिंदगी का अहम हिस्सा है। कृत्रिम मेधा को स्पष्ट करते हुए उन्होंने भाषा के क्षेत्र में उसके प्रयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि तकनीक के क्षेत्र में पैदा होनेवाली प्रश्नों का जवाब नई तकनीक ही दे रही है। आज प्रौद्योगिकी हमारी मदद के नए तरीके खोज रही है। भविष्य में चैटजीपीटी साहित्य का अनुवाद करने में सक्षम होगी। कृत्रिम मेधा के जरिये अनुवाद संभव है। कृत्रिम मेधा भविष्यवाणी कर सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बहुत लाभ हैं–समय की बचत, हिंदी डिक्टेशन, अनुवाद, स्वतः डिजाइन, व्यक्तिगत सहायक और दिव्यांग जन जो हिल–डुल भी नहीं सकते हैं, वे भी कृत्रिम मेधा की मदद से केवल देखकर टाइप कर सकते हैं। हिंदी में तकनीक की संभावनाएं बहुत हैं जिसमें कृत्रिम मेधा का बहुत महत्व है। डेरा नाटुंग शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर के सहायक प्राध्यापक तुम्बम रेवा ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है जहां सौ से अधिक जनजातियां निवास करती हैं जिनकी अलग–अलग बोलियां हैं और सभी आपस में भिन्न हैं। हिंदी हमारे राज्य में संपर्क भाषा का काम करती हैं। उन्होंने कहा कि हम हिंदी की नहीं, हिंदी हमारी सेवा कर रही है। हमारी जनजाति में नामकरण की प्रणाली अनोखी एवं पारंपरिक है। पिता के नाम के बाद दो अक्षर बच्चे के नाम का होता है, जिससे किसी भी बच्चे के दादा–परदादा का नाम जान लिया जाता है और इस कारण कोई बच्चा गलत सामाजिक आचरण नहीं करता है। हम लोग वनस्पतियों के पारंपरिक ज्ञान से लोगों को रोगमुक्त करते आए हैं। सुश्री रेवा ने पूर्वोत्तर भारत के अनूठे राज्य अरुणाचल प्रदेश के भाषायी वैविध्य की विशिष्टता को उजागर करते हुए कहा कि पारंपरिक ज्ञान आधुनिक तकनीक से संपन्न विश्व के लिए अमूल्य वरदान है। शासकीय महाविद्यालय, दोईमुख, अरुणाचल प्रदेश के सहायक प्राध्यापक डॉ. तादाम रुती ने कहा कि आधुनिक तकनीक में कृत्रिम मेधा का बहुत महत्व है, इस क्षेत्र में बहुत से शोध कार्य हो रहे हैं। कृत्रिम मेधा के दो पहलू हैं। इसमें संभावनाएं बहुत हैं तो दुष्परिणाम भी हैं। सांची विश्वविद्यालय के डॉ. देवेन्द्र सिंह ने सत्र का संचालन किया।

'रामचरित मानस का गिरमिटिया देशों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा'

नादी, 15 फरवरी, 2023। गिरमिटिया देशों में हिंदी विषय पर आयोजित समानांतर सत्र में वक्ता प्रीति ने गिरमिटिया देशों में प्रवासी साहित्य और समाज के दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया। उन्होंने साहित्य में समाज की उपस्थिति, उनके दुःख–दर्द, उनकी पीड़ा और संवेदनाओं के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की। वक्ता डी.एन. राव ने कहा कि रामचरितमानस का गिरमिटिया लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। भाषा ही माध्यम है जो व्यक्ति को समाज से जोड़ता है। प्रो. वंदना झा ने गिरमिटिया देशों में कविता के माध्यम से हिंदी की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए कविताओं में उभरी संवेदनाओं और अनुभव की गूढ़ता को रेखांकित किया। योगेंद्र प्रताप सिंह ने गिरमिटिया देशों में हिंदी की स्थिति और दशा–दिशा पर प्रकाश डाला। हिंदी ही वह माध्यम है जो हमें एकसूत्र में पिरोकर रखता है। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि एक ही जहाज में चढ़नेवाले सभी लोग जहाजी भाई थे। धर्म, जाति, संप्रदाय की संकीर्णताओं से परे। मेरा यहां 35 वर्षों का अनुभव रहा है, यहां पर जो भी लोग आए, वे अपने साथ रामचरितमानस लेकर आए। राम का 14 वर्ष का वनवास समाप्त हो गया था पर इन लोगों का वनवास कभी समाप्त नहीं हुआ। पग–पग पर रामायण ही उनके काम आई। इन्होंने जीवन के अर्थ रामायण के सहारे संपूर्ण किए। गिरमिटिया देशों की अलग–अलग हिंदी है। खानपान और संस्कृति के कई विविध रूप इन देशों की भाषाओं में मिलते हैं। फिजी वह देश है जहां 1916 ई. में गिरमिट प्रथा की समाप्ति का बिगुल फूंका गया था।

रोमन लिपि में लिखी जाने वाली पूर्वोत्तर की भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रावधान हो : प्रसाई

नादी, 15 फरवरी, 2023। 'सूचना प्रौद्योगिकी और इक्कीसवीं सदी की हिंदी' विषयक समानांतर सत्र के अध्यक्ष त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा के कुलपति प्रो. गंगाप्रसाद प्रसाई ने कहा कि हिंदी भाषा व साहित्य को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक. ाधिक बढ़ावा देना चाहिए। आज सारा ज्ञान–विज्ञान डिजिटल हो रहा है। ऐसे में हिंदी के विकास के लिए सूचना तकनीक का उपयोग करना है। उन्होंने यह भी कहा कि पूर्वोत्तर भारत की कई भाषाएँ रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। इन भाषाओं को देवनागरी लिपि में लिखने का प्रावधान होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की गई है, इसके उत्साहजनक परिणाम आएंगे। सत्र के पहले वक्ता प्रो. नरेंद्र मिश्र, दिल्ली ने कहा कि आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज जिसकी तकनीक पर पकड़ अच्छी है, वह लाभ की स्थिति में है। सूचना तकनीक ने हिंदी के विस्तार को व्यापक फलक प्रदान किया है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ट्विटर, फेसबुक आदि की भाषा के रूप में हिंदी की पहुँच बढ़ रही है। डिजिटल मीडिया में भारतीय भाषाओं की पहुँच बढ़ी है। हिंदी वेब पोर्टल, वेब दुनिया की शुरुआत ने इस दिशा में पहला कदम बढ़ाया था। आज हिंदी के अनेक सर्च इंजन उपलब्ध हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही हिंदी विश्व भाषा बन पाई है। इस दौरान केरल की डॉ. पी. प्रिया ने कहा कि दुःख की बात है कि 1975 से आज तक हिंदी विश्व भाषा का दर्जा नहीं ले पायी है। भारत विश्वगुरु का स्थान ले पाएगा, ऐसा विश्वास है। इसके लिए हिंदी की बड़ी भूमिका होगी और इसके लिए यह संकल्प लिया जाना चाहिए कि संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार हो। 37 बार के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डॉ. शंभू प्रभुदेसाई ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग जीवन के विविध क्षेत्रों में हो रहा है। वाणिज्य, मनोरंजन, खेल आदि सभी क्षेत्रों में हिंदी का चलन बढ़ा है। भारत सरकार हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का सक्रिय उपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि संचार क्रांति ने दुनिया को मुट्ठी में कर दिया है। पुस्तकालय, शिक्षा, विज्ञान आदि क्षेत्रों में तकनीकी का प्रयोग बढ़ा है। हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। डॉ. अनुराग शर्मा ने सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया पर अपनी बात रखते हुए कहा कि भविष्य की हिंदी अधिक गतिशील और भविष्योन्मुखी हो, इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। सुखद बात है कि संचार माध्यमों में हिंदी का प्रचार तेजी से बढ़ रहा है। हिंदी समिति इंडियाना, अमरीका के डॉ. राकेश कुमार ने कहा कि हम लोग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी भाषा के शिक्षण–प्रशिक्षण की दिशा में बहुत सार्थक तरीके से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कृत्रिम मेधा के उपयोग से हिंदी के शिक्षण की बात की। साथ ही उन्होंने डिजिटल जेनेरेशन की भी चर्चा की। हिंदी समन्वय समिति, अमरीका के डॉ. राकेश कुमार ने कहा कि हमारी संस्था सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में बहुत सक्रिय भूमिका निभा रही है। सत्र के सह–अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि अब यह बात पुरानी हो गई है कि हिंदी में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के लिए शब्द नहीं हैं। आज यह बात सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आसानी से संभव हो गई। सूचना प्रौद्योगिकी ने हिंदी का विकास संभव बनाया है। सत्र का संचालन और आभार–ज्ञापन डॉ. पद्मप्रिया श्रीयमकवाचम ने किया।

फिजी के स्कूलों में हिंदी अनिवार्य करने की जरूरत : महेंद्र चौधरी

नादी, 15 फरवरी 2023। 'फिजी और प्रशांत क्षेत्र में हिंदी' सत्र की अध्यक्षता करते हुए फिजी गणराज्य के पूर्व प्रधानमंत्री और भारतवंशी श्री महेंद्र चौधरी ने कहा कि फिजी में हिंदी के स्थायित्व के लिए यहाँ के स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य करने की जरूरत है। खासकर प्राइमरी स्कूल में अनिवार्यतः हिंदी पढ़ाई जानी

चाहिए। इसके लिए भारत सरकार को भी राजनयिक स्तर पर पहल करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पहले फिजी में चार अखबार निकलते थे, अब एक भी नहीं है। मानक हिंदी की स्थिति को भी हमें गंभीरता से लेना होगा। बोलचाल की हिंदी भी चले और मानक हिंदी भी। इससे हिंदी की समृद्धि व ताकत और बढ़ेगी। चुनाव, उत्सव–त्योहार, विवाह और पूजा के साथ–साथ हिंदी को रोजगार की भाषा भी बनानी होगी, वरना अंग्रेजी के वर्चस्व को कम करना संभव नहीं हो पाएगा। इस सत्र में फिजी के कई महत्वपूर्ण वक्ताओं ने अपनी बातें रखीं। डॉ इंदु चंद्रा ने प्रशांत क्षेत्र में हिंदी के विविध परिदृश्यों पर अपने विचार रखे। उन्होंने प्रशांत क्षेत्र की समकालीन रचनाशीलता पर भी प्रकाश डाला। डॉ. सुभाषिनी लता ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने अपनी मेहनत और बलिदान से अपनी–अपनी गिरमिट जमीन को समृद्ध किया, इस पर हम सबको गर्व है। डॉ. लता ने तोताराम सनाढ्य के योगदान को रेखांकित करते हुए उनके लेखन को प्रवासी हिंदी साहित्य का आरंभिक बिंदु माना। उन्होंने फिजी के महत्वपूर्ण हिंदी साहित्यकारों और उनकी कृतियों पर भी चर्चा की। वरिष्ठ लेखक पंडित भुवन दत्त ने फिजी में हिंदी की चुनौतियों पर बात करते हुए कहा कि नई पीढ़ी के बच्चों और उनके अभिभावकों में हिंदी के प्रति अरुचि और उदासीनता चिंताजनक है। सरकार की तरफ से भी हिंदी को कोई प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। शिक्षार्थियों को ध्यान में रखते हुए हिंदी पाठ्य पुस्तकों एवं पाठ्यक्रमों की समीक्षा होती रहनी आवश्यक है। हमें इसके लिए प्रशिक्षित अध्यापकों की भी जरूरत है। वरिष्ठ साहित्यकार मनोहर नासी ने हिंदी को सरल–सहज और व्यावहारिक बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार पूरे विश्व में हिंदी के पठन–पाठन को सुगम और उपयोगी बनाने के लिए पहल करे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कभी भी इंसानी दिमाग की जगह नहीं ले सकता है। तमिलनाडु से आए डॉ एस वी एस राजू ने दक्षिण भारत क्षेत्र की हिंदी के परिदृश्य पर बातें कीं। इस सत्र के सह–अध्यक्ष केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष अनिल जोशी ने कहा कि गिरमिटिया देशों में केवल फिजी ही ऐसा देश है, जहाँ की हिंदी सबसे जीवंत है। आज यहाँ विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहा है, इसमें फिजी के हिंदी भाषियों का बड़ा योगदान है। फिजी हिंदी और फिजीवाद फिजी की ताकत है लेकिन मानक हिंदी को बढ़ावा देना भी जरूरी है। श्री जोशी ने फिजी के अप्रकाशित साहित्य को भारत द्वारा प्रकाशित करने की जरूरत बतलाई। इस सत्र का संचालन प्रो. विनोद कुमार मिश्र और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विवेकानंद उपाध्याय ने किया। सत्र के अंत में 'प्रवासी भारत' पत्रिका के नए अंक का लोकार्पण भी किया गया।

संचार माध्यमों ने हिंदी के विश्वबोध को बढ़ाया : राममोहन पाठक

नादी, 15 फरवरी, 2023 : 'मीडिया और हिंदी का विश्वबोध' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. राममोहन पाठक ने कहा कि 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक को आठ बार देखने का अनुभव गांधीजी को सत्य एवं अहिंसा की प्रेरणा दे गया, जिसे गांधीजी ने पूरे विश्व में

फैलाया। आज के संचार माध्यमों ने हिंदी के विश्वबोध को बढ़ाया है। पांचजन्य के संपादक श्री हितेश शंकर ने कहा कि जब कीमत चुकाई जाती है तब मूल्य पैदा होता है। जो हिंदी का स्वभाव है, वही विश्व का भाव है। विनोबा भावे के माध्यम से प्रकृति, विकृति एवं संस्कृति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम संस्कृति को स्वीकार करते हैं, जो त्याग और समर्पण की परिचायक है तथा विश्व बंधुत्व का पाठ पढ़ाती है। आज जो मन का औदार्य है, वही हिंदी का भाव है। डॉ. नीरजा माधव ने कहा कि भारत में जो तकनीक और मीडिया है, वह बहुत पुराना है। भागवतपुराण और दुर्गासप्तशती से संदर्भों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी सर्वदा से विश्वबोध देती रही है। हमारी संस्कृति एवं विशेष रूप से हमारी संगीत परंपरा को जानने के लिए विदेशों से ही लगातार लोग आते रहे हैं। हिंदी में संबंधों की दुनिया के शब्द चाची, काकी, मौसी, बुआ, पड़ोसी आदि अनेक शब्दों के लिए अंग्रेजी में एक शब्द व्यवहार में लाया जा रहा है, वह शब्द है–आंटी। आंटी शब्द ने कई संबंधों को सीमित किया है। यह एक तरह से शब्दों के साथ हिंसा हो रही है। प्रो. मिथिलेश मिश्र ने कहा कि हिंदी को लेकर हीनभावना से न तो ग्रसित हों, न कुंठित हों पर अंग्रेजी को लेकर दुराव का भाव नहीं होना चाहिए। हिंदी के स्वाभिमान को वैश्विक स्तर पर फैलाना है। आज मीडिया को मूल्यपरक होना चाहिए। पी. रा. जरत्नम ने कहा कि आज दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के माध्यम से दक्षिण में लोग हिंदी सीख भी रहे हैं और विकास भी कर रहे हैं। मीडिया के प्रसार तंत्र ने हिंदी को पूरे विश्व में फैलाया है। आज उसकी मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। डॉ. रेनू सिंह ने मीडिया और हिंदी के विश्वबोध विषय पर कहा कि आज मीडिया ने हिंदी को विश्व स्तर पर फैलाया है। प्रसिद्ध साहित्यधर्मी श्री श्रीधर पराडकर ने कहा कि अपने मूल्यों को संरक्षित रखते हुए हमें हिंदी के विश्वबोध को विस्तार देना है। प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि पहले हम हिंदी प्रेम से सीखते थे। आज बाजार के माध्यम से हिंदी सीख रहे हैं। मीडिया ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दी है। इस अवसर पर प्रो. कामेश्वर सिंह ने भी मीडिया के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा की और हिंदी के विश्वबोध से परिचित कराया।

फिजी के प्रधानमंत्री की भारत के विदेश मंत्री के साथ बैठक

फिजी के प्रधानमंत्री श्री सितिवेनी राबुका और श्रीमती राबुका ने भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के साथ भेंट की। विदेश राज्यमंत्री श्री वी. मुरलीधरन, भारत के गृहराज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र व भारतीय सांसदों का शिष्टमंडल भी उपस्थित रहा

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक

कई पुस्तकें लोकार्पित

भारत के विदेश राज्यमंत्री श्री वी. मुरलीधरन ने आचार्य रजनीश कुमार शुक्ल की पुस्तक 'भारतबोध – सनातन और सामयिक', प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी की पुस्तक 'मौन के व्रत', जयप्रकाश पाण्डेय की 'दूर नीड़ के पक्षी' तथा 'दरिया के दो पाट', रोहित कुमार हैप्पी की 'प्रशांत की लोकथाएं' तथा 'न्यूजीलैंड की हिंदी यात्रा', बाल. न्दु शर्मा दाधीच की 'तकनीक तेरे कितने आयाम', प्रो. मनोज कुमार और अमित कुमार विश्वास की संपादित पुस्तक 'गांधी दृष्टि – युवा रचनात्म. कता के आयाम', प्रो. रविप्रकाश टेकचंदानी द्वारा संपादित 'सिंधी की लोकप्रिय कहानियां', राजेश कुमार मांझी की 'गिरमिटिया भारतवंशी' तथा हिंदी अनुशीलन पत्रिका के 'दादूदयाल विशेषांक' का लोकार्पण किया।

शोध पत्रों का वाचन

मंचस्थ सर्वश्री नीलम राठी, माला मिश्र, पवन अग्रवाल, सुशील कुमार शर्मा

प्रतिभागियों के अभिमत

हिंदी में सरल शब्दों का प्रयोग हो

प्रो. हाइंज वर्नर देस्लर, स्वीडन

सम्मेलन में आकर बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि यहाँ पर विश्व भर के हिंदी विद्वानों से मिलना हो पाया है। सम्मेलन में आने से हम दूसरे देशों के रचनाकारों की रचनाओं से रूबरू हो पाए हैं। हिंदी के क्षेत्र में भारत की नई शिक्षा नीति के अनुरूप कई भाषाओं में काम हो रहा है परंतु पारिभाषिक शब्दावली केवल अंग्रेजी में देखने को मिल रही है। नियमतः पारिभाषिक शब्दावली त्रैभाषिक शब्दावली होनी चाहिए। प्रवासी समाज की रुचि हिंदी के प्रति अलग अलग है जिसके कारण हिंदी के प्रचार प्रसार सीमित है। यदि हम युवाओं को हिंदी से जोड़ना चाहते है तो हिंदी में सरल और सुबोध शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

जापान और भारत की भावनात्मक एकात्मकता की परिचायक है हिंदी

प्रो. तोमिओ मिजोकामी, जापान

विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजनों से हम एक–दूसरे के साहित्यिक योगदान के बारे में जान पाते हैं। आज हिंदी को कई लोग रोमन लिपि में लिख रहे हैं, जिसका हम विरोध कर रहे हैं। हिंदी भारत और जापान की एकात्मकता की परिचायक है। हिंदी सीखकर जापान के लोग भारतीय सभ्यता–संस्कृति को भली–भाँति समझ सकते हैं और इस प्रकार से पारस्परिक संबंधों में मधुरता और प्रगाढ़ता आ सकती है। सम्मेलन में मुझे एक कमी यह महसूस हुई कि समानांतर सत्रों में भाग लेते हुए, केवल एक ही सत्र के वक्ता को हम सुन पाते हैं और दूसरे सत्र से लाभ नहीं उठा पाते हैं।

श्रीलंका में हिंदी का प्रसार बढ़ा

अतिला कोतलावल, श्रीलंका

श्रीलंका में बॉलीवुड की फिल्मों के माध्यम से हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ा है तथा बच्चे अब हिंदी में अधिक रुचि लेने लगे हैं। साथ ही, एक कमी यह भी है कि नई तकनीकों और सोशल मीडिया के आने से कई बार बच्चे दिन भे फेसबुक, ट्विटर आदि पर समय बर्बाद करते हैं और पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते हैं। सोशल मीडिया का एक फायदा यह हुआ है कि हिंदी में रुचि रखने वाले बच्चे नई तकनीकों के माध्यम से हिंदी सीख रहे हैं।

सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग हो

डॉ. संध्या सिंह, सिंगापुर

विदेशों में रहने वाले भारतवंशी अपने बच्चों के साथ बात.चीत में हिंदी का प्रयोग करेंगे तब हिंदी संरक्षित रह सकती है। हिंदी लिखते समय हमें सदैव देवनागरी लिपि का प्रयोग करना चाहिए चाहे सोशल मीडिया पर लेखन क्यों न हो। अध्यापन के क्षेत्र में हिंदी का प्रचार–प्रसार सिंगा.पुर में काफी बढ़ा है और यहां के बच्चे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से हिंदी के माध्यम से परिचित हो पाए हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ कदम बढ़ाती हिंदी

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. हरमोहिंदर सिंह बेदी से प्रो. शिरीष पाल सिंह की बातचीत

आपके अनुसार हिंदी भाषा के उन्नयन में विश्व हिंदी सम्मेलन की क्या उपादेयता है?

21वीं शताब्दी से 22 वीं शताब्दी तक जाते–जाते विकास के किन–किन बड़े दौरों से भारत गुजरा है और विश्व को भारत की आर्थिकता ने, भारत की सांस्कृतिक चेतना ने और विशेषकर भारतीय वांड्मय ने प्रभावित किया है। इस वस्तुस्थिति को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन जो कि फिजी में आयोजित किया जा रहा है यह बात सिर्फ फिजी तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि अन्य देशों के जो प्रतिनिधि आए हैं या मीडिया के माध्यम से जहां–जहां तक आवाज पहुंचेगी, पूरे विश्व में भारत की भाषाएं, संस्कृति, मान्यताएं, परंपराएं एक नए आकाश का सृजन कर रही है।

हिंदी भाषा की लोकप्रियता में मीडिया की क्या भूमिका है?

संयुक्त राष्ट्र संघ के भाषा सर्वेक्षणों में यह आया था कि आने वाले दिनों में बहुत सारी बोलियों एवं भाषाओं का अस्तित्व मिट जाएगा जैसे ही यह सर्वेक्षण विश्व के सामने पहुंचा तो दुनिया की चिंता अपनी संस्कृति, अपनी भाषा को लेकर होने लगी। मुझे लगता है कि भाषा के अस्तित्व को बचाएं रखने के लिए पहला बड़ा कदम मीडिया के माध्यम से विश्व के सामने यह आया कि छोटे–छोटे देश और छोटी–छोटी भाषाओं से प्यार करने वाला जनसमूह अपनी भाषा के प्रति जागरूक हुआ, एक बहुत बड़े दायित्व का निर्वाह मीडिया कर्मियों ने किया और दूसरी तरफ जो दुनिया की भाषाएं उनकी जो ज्ञान परंपरा है उनका जो इतिहास है, उन्होंने जो कुछ अर्जित किया, उस ज्ञान के प्रचार प्रसार में भी मीडिया ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई और यह आदान–प्रदान की जो बड़ी भाषाएं थी, छोटी भाषाओं के साथ उनका जब आदान–प्रदान होने लगा तो कहीं लगा कि मीडिया के ऐसे प्रयासों से आने वाले दिनों में भाषाओं का संकट वह संकट नही है जिसके लिए हमें चेतावनी दी गई और मीडिया के माध्यम से जो नई नई तकनीकें आ रही है, साथ–साथ मीडिया कर्मी बहुत सारी आवाजों को, स्वरों को, अपने कैमरे में, अपने कंप्यूटर में, अपनी ईमेल के माध्यम से पूरी दुनिया के सामने पहुंचा रहे हैं। मुझे तो लगता है कि मीडिया की जो नई नई तकनीक विकसित होंगी तो भाषाएं अपनी गरिमा के साथ एक जीवंतता की ओर बढ़ेगी

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी भाषा किस प्रकार अपने आपको स्थापित करके रख सकती है?

कुछ लोगो ने इस पर बहुत चिंता अभिव्यक्त की है कि जितनी तेजी से विज्ञान आगे बढ़ रहा है शायद भाषा विशेषकर हिंदी भाषा पिछड़ रही

है, पर ऐसी बात नही है, हिंदी में विज्ञान के साथ भी अपने कदमों को मिलाकर उसकी शक्ति को पहचाना, आप देखिए कि बीसवीं शताब्दी और 21वीं शताब्दी में हिंदी भाषा में बिल्कुल अपने वर्चस्व को, अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए जितना ज्ञान विज्ञान की नई टेक्नोलॉजी आ रही है उसको केवल अपनाया नहीं बल्कि उसमें सिद्धता भी हिंदी के लेखकों ने, हिंदी के मीडिया कर्मियों ने प्राप्त की है। आज आप देखिए कि एशिया के देशों में यह माना जाता है कि भारतीय भाषाओं में प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी में एक नई क्रांति दुनिया के सामने रखी है। इंटरनेट का जमाना है जिसने हिंदी भाषा के विकास के नए दरवाजे खोल दिए है।

गिरमिटिया देशों में हिंदी की विकास यात्रा को आप किस प्रकार से देखते हैं?

देखिए भारतवर्ष के लोग यायावर रहे है, दो तरह से यह यायावरी शुरू हुई पहली मजबूरी मे दूसरे देशों में बसने और दूसरी यायावरी भारतीय ज्ञान परंपरा को अन्य देशों तक पहुंचाने में। यह दोहरी प्रक्रिया थी, दुनिया के विद्वान जो कि अध्ययन के लिए भारत आए और यहां से हमारी ज्ञान परंपरा को लेकर दूसरे देश में गए या फिर मजबूरी में अपना देश छोड़कर रोजी रोटी के लिए जाना पड़ा। ऐसे समस्त व्यक्तियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्वों को विश्व संस्कृति का हिस्सा बनाया। गिरमिटिया संस्कृति या प्रवासी भारतीयों का योगदान इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है दूसरी ओर जो हमारी ज्ञान परंपरा थी, ये जो प्रवासी डायसपोरा है इसने दुनिया को दिया बहुत कुछ। जो हमारी ज्ञान परंपरा थी, नालंदा में, तक्षशिला में। एशिया के विद्वान तक्षशिला में ज्ञान अर्जित करने आते थे, श्रीमद्भगवद्गीता वहां पढ़ाई जाती थी, रामायण का अध्ययन होता था, चाणक्य का उच्च कोटि का अर्थशास्त्र पढ़ाया जाता था, उच्च कोटि का व्याकरण वहां था, तो यह जो हमारी परंपरा है यहां से जो लोग प्रवास करते थे, ज्ञान के लिए भारत में रहते थे, भारत की यात्राएं करते थे, तो मुझे लगता है एक तो उसे पुनर्जीवित करने की जरूरत है। वह पुनर्जीवित हो रही है, आज वेदों का, उपनिषदों का भारतीय वांड्मय का अध्ययन केवल एशिया के देशों तक नहीं बल्कि पूरे विश्व में हमारी वैदिक गणित की चर्चा हो रही है, हमारा औषधि विज्ञान आगे बढ़ रहा है इसलिए यह जो हमारी परंपराएं हैं मुझे लगता है कि प्रवासियों ने इन परंपराओं को जिंदा रखा, आज रामचरितमानस और अन्य जो हमारी महाभारत जैसी अमर कृतियां हैं वैसे ही उन देशों की भाषाओं में अनुवाद हो रही है क्योंकि प्रवासी वहां पर बसे हुए हैं।

हिंदी बने जनसामान्य की भाषा

संघ लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रदीप कुमार जोशी से विशेष बातचीत

गिरमिटिया देशों में किस प्रकार हिंदी भाषा के विकास को सुनिश्चित करना होगा?

हिंदी का अध्ययन मात्र हिंदी साहित्य एवं हिंदी भाषा का अध्ययन नही हैं, बल्कि विज्ञान के क्षेत्र में भी जो नए अनुसंधान हो रहे हैं, किसी व्यावसायिक व्यक्ति अथवा उद्योगपति की कोई सक्सेस स्टोरी जो की स्थानीय अधिक हो, नई वैज्ञानिक तकनीकी जैसे वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, गार्बेज डिस्पोजल सिस्टम साथ ही सफल छोटे व्यवसाई किस प्रकार से बने हैं, उद्यम किस प्रकार से किए जा सकते हैं, इस प्रकार के विषय भी समाहित होने चाहिए। जैसे कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कहते हैं कि रोजगार के पीछे भागने वाला न होकर रोजगार प्रदान करने वाला हम बन सके, ऐसा सोचना चाहिए और प्रयास करना चाहिए, इस प्रकार के विषय हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल होने से कोई भी छात्र हिंदी में स्नातक एवं स्नातकोत्तर करने के उपरांत केवल हिंदी के अध्यापन के लिए नहीं वरन अन्य भी कई

कार्यों के लिए तैयार हो सके। इस प्रकार हिंदी जनसामान्य के बीच में अधिक लोकप्रिय बन सकेगी। गिरमिटिया एवं प्रशांत सागर के देशों में हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार करते समय इन विषयों को हिंदी के पाठ्यक्रम में समाहित करना श्रेयस्कर रहेगा तथा इसके साथ ही हिंदी जन सामान्य की भाषा बन सके इसके लिए हिंदी में क्लिष्ट शब्दों के स्थान पर सरल और स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग अधिक किया जा सकता है।

हिंदी भाषा के किन क्षेत्रों पर अनुसंधान की अधिक आवश्यकता है?

हिंदी के क्षेत्र में भारतीय पारंपरिक ज्ञान जिसके आधार पर अनेक वैज्ञानिक तथ्यों तथा विश्लेषणात्मक विषयों की व्याख्या की गई हैं जैसे घाघ इत्यादि पर शोध की आवश्यकता है, इसके साथ साथ प्राचीन भारतीय शासकों की व्यवसायिक व्यवस्था के संबंध में भी शोध की आवश्यकता है। इसके साथ–साथ प्राचीन भारतीय शासक किस प्रकार की प्रबंधन की व्यवस्था करते थे, इस विषय पर भी शोध की आवश्यकता है।

विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रतिभागी के रूप में आपका क्या अनुभव है?

मुझे ऐसा लगता है कि १२वां विश्व हिंदी सम्मेलन, हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को लोकप्रिय बनाने के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा, इस सम्मेलन में देश के उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक अनेक विद्वानों ने सहभागिता की है, साथ ही विभिन्न देशों में निवास करने वाले विद्वान सहभागिता कर रहे हैं। सम्मेलन के विषय भी केवल साहित्यिक न होकर जैसे पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा 21वीं सदी की हिंदी, मीडिया और हिंदी, विश्व बाजार और हिंदी जैसे विषय जो हिंदी को लोकप्रिय बनाने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण साबित होंगे पर ध्यान केंद्रित किया है। इन विषयों पर ध्यान केंद्रित करने से यह सम्मेलन अपने आप में अनूठा रहा है तथा हिंदी को एक नई दृष्टि प्राप्त हुई है।

प्रधान संपादक
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

कार्यकारी संपादक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र

समन्वयक संपादक
प्रो. कृपाशंकर चौबे

संपादन सहयोग
प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. प्रीति सागर, प्रो. अवधेश कुमार, प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, प्रो. शिरीष पाल सिंह, डॉ. प्रियंका मिश्र, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. योगेन्द्र बाबू, राजेश कुमार यादव, डॉ. अमित कुमार विश्वास, पवन कुमार, अंजलि हजगैबी बिहारी, डॉ. उर्वशी गहलौत, डॉ. राजेश कुमार 'मांझी'

मुद्रक एवं प्रकाशक
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली